Lilavati Hospital and Research Centre

More than Healthcare, Human Care

राष्ट्रीय नवाचार
व्यापक दृष्टिकोण, ईमानदार कोशिश

नवाचारः रीढ़ की हड्डी से जुड़ी एक जन्मजात बीमारी, पोलियो से भी है बदतर, मुफ्त में हो रही है सर्जरी

अब कोख में ही हो जाएगा 'स्पाइना बिफिडा' बीमारी का इलाज

मोफीद खान | मुंबई

- अब तक विदेशों में उपलब्ध सर्जरी की तकनीक मुंबई में मुहैया
- माता के बी-9 विटामिन सेवन न करने से नौनिहाल हो रहे बीमार

हर साल 40 हजार बच्चों में जन्मदोष

डॉ. संतोष ने बताया कि स्पाइना बिफिडा रीढ़ की हड्डी का एक जन्मदोष है जो पोलियो से भी बदतर है। हर साल 40 हजार बच्चे इस जन्मदोष के साथ पैदा हो रहे हैं। उन्होंने बताया कि इस बीमारी का निदान गर्भावस्था के दौरान या जन्म के बाद बच्चे में पाए जानेवाले लक्षणों के आधार पर किया जाता है। उन्होंने बताया कि इस बीमारी से पीड़ित करीब 600 से 700 बच्चों की सर्जरी लीलावती अस्पताल में की गई है। इनमें से अधिकांश बच्चों की सर्जरी अस्पताल ने स्पाइना बिफिडा फाउंडेशन की मदद से मुफ्त में की है। उन्होंने बताया कि 30 जनवरी को अस्पताल में इसी बीमारी को लेकर एक कैम्प का आयोजन किया गया है।

सर्जरी से जोखिम नियंत्रण

डॉ. संतोष के मुताबिक इस बीमारी से पीड़ित बच्चों की 4 सर्जरी पांच वर्ष की आयु के भीतर की जाती है। जिसमें पीठ की सर्जरी, ब्रेन में पानी, यूरिन-स्टूल सर्जरी आदि का समावेश है। उन्होंने बताया कि फीटल सर्जरी के माध्यम से जन्म के बाद होनेवाली जटिलताओं को 50 फीसदी से ज्यादा कम किया जा सकता है। उन्होंने बताया कि देश में अभी तक इस तरह की सर्जरी नहीं हुई है, लेकिन इस साल से इसे अस्पताल में शुरू करने की हमारी तैयारी है।

नवजातों में जन्मजात बीमारियों में से एक स्पाइना बिफिडा बीमारी के जोखिमों को कम करने के लिए अब नवजातों का इलाज कोख में रहते ही किया जा सकेगा। हालांकि इस बीमारी का इलाज सिर्फ सर्जरी से संभव है, जिसकी तकनीक अभी तक सिर्फ विदेशों में ही उपलब्ध थी, लेकिन इस साल से यह फीटल सर्जरी भारत में भी हो सकेगी। इसे लीलावती अस्पताल में शुरू करने की तैयारी पूरी हो गई है। स्पाइना बिफिडा नौनिहालों की रीढ़ की हड्डी से जुड़ी एक जन्मजात बीमारी है। इसके कारण नवजात शिशु को ज्यादातर कमर के आसपास फोड़ा होता है। कुछ बच्चे ऐसे भी होते हैं, जिनके सिर या गर्दन पर ये दिखाई देता है। लीलावती अस्पताल के पीडियाट्रिक सर्जन डॉ. संतोष करमरकर ने बताया कि इसके पीछे गर्भावस्था के दौरान महिलाओं द्वारा विटामिन बी-9 का सेवन न करना या कम करना है। उन्होंने बताया कि देश में महिलाओं के बीच ये स्थिति इतनी विकट है कि दुनिया में सबसे ज्यादा इसके मरीज भारत में मिल रहे हैं।